बिली बकरी और
उसके खाए-पिए दोस्त

नोनी होग्रोगियन

बिली बकरी और उसके खाए-पिए दोस्त

नोनी होग्रोगियन
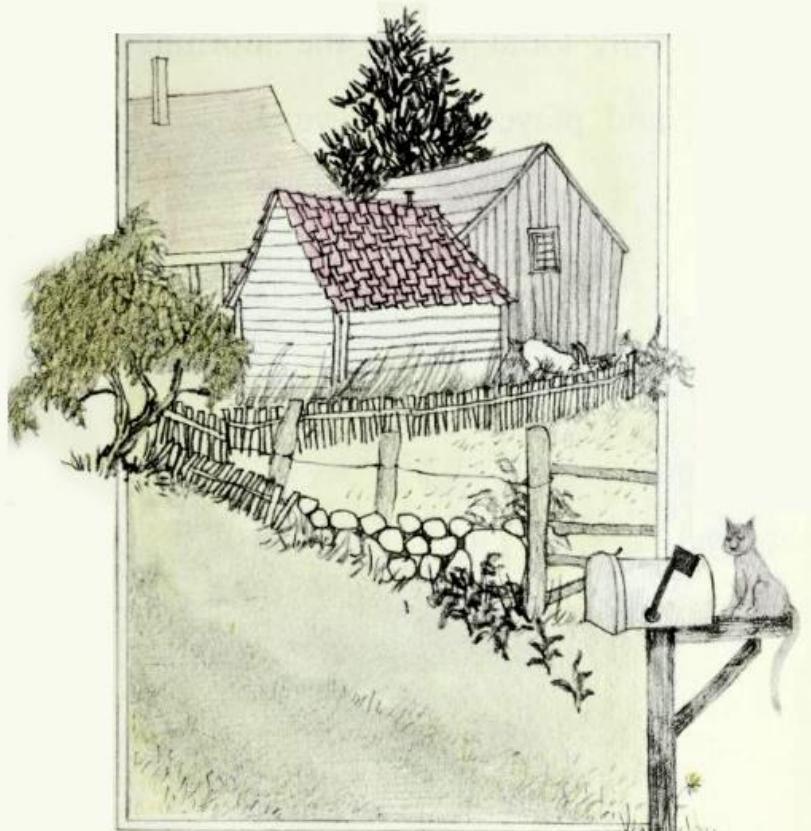
बिली बकरी एक फार्म पर रहती थी.

बिली बकरी सुबह को खाती थी
और फिर अहाते में खेलती थी.
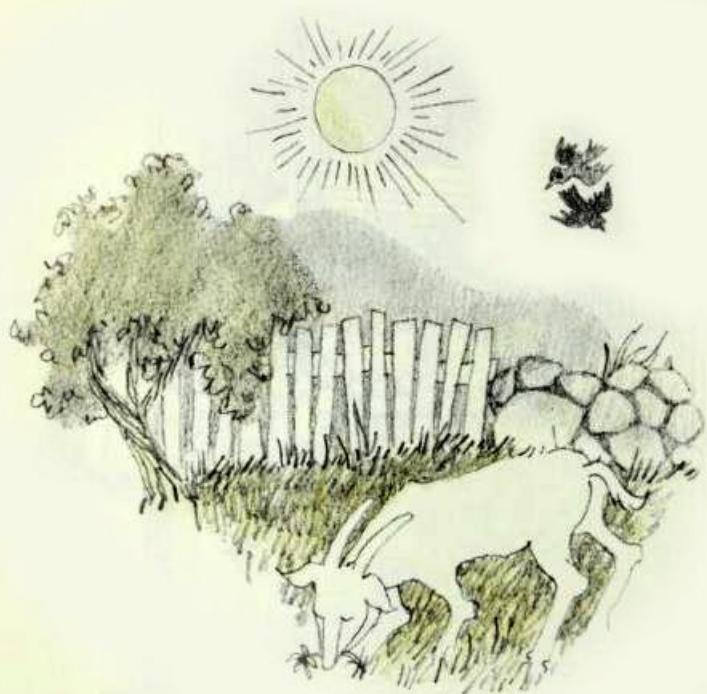
बिली बकरी दोपहर को खाती थी
और फिर अहाते में खेलती थी.
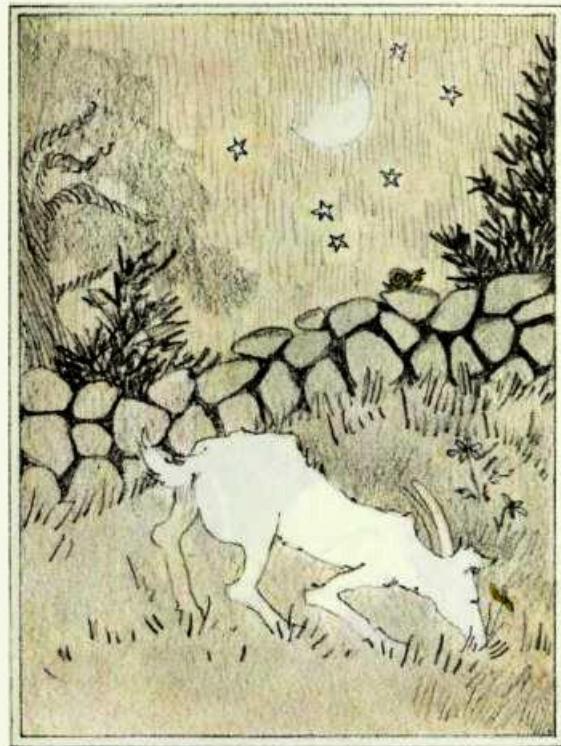
बिली बकरी शाम को खाती थी
और फिर से अहाते में खेलती थी.

फिर वो पूरी रात सोती थी.

बिली बकरी अगली सुबह उठती थी
और फिर वही करती थी.

वो दिनभर खाती और खेलती,
और फिर खाती और सोती थी.

लेकिन हर नए दिन, बिली बकरी और ज्यादा खाती पर कम खेलती थी.

उससे बिली बकरी मोटी होती गई!

एक सुबह किसान ने अपनी पत्नी से कहा, "जल्द ही बिली बकरी हमारे खाने के लिए तैयार हो जाएगी."

बिली बकरी ने किसान की बात सुनी.

"नहीं! अगर संभव हुआ तो मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगी!" उसने कहा.

फिर बिली बकरी ने अपने
सींगों को फाटक पर मारा.

और वो किसान के फार्म से भाग गई!

बिली बकरी उस फार्म के पास से
गुज़री जहाँ मोटा सुअर रहता था.

"हेलो, सुअर," बिली बकरी ने कहा.

"हेलो बकरी," गोल-मटोल सुअर ने कहा.

"आज सुबह तुम्हारा पेट अच्छी तरह से भरा हुआ दिखता है," बिली बकरी ने सुअर से कहा.

"हाँ, ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरा किसान मुझे बहुत पसंद करता है," गोल-मटोल सुअर ने कहा.

"नहीं, वो इसलिए है क्योंकि किसान तुम्हें बाद में खाना चाहता है," बिली बकरी ने कहा.

"नहीं! अगर संभव हुआ तो मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा!" गोल-मटोल सुअर ने कहा.

"तो तुम मेरे साथ आओ," बिली बकरी ने कहा.

"हम जंगल में एक घर बनाकर एक-साथ शांति से रहेंगे."

मोटा सुअर, बिली बकरी के साथ जुड़कर खुश था.

दोनों दोस्त एक नए घर की तलाश करने लगे.

रास्ते में वे एक मोटी बत्तख से मिले.

"हेलो, बत्तख, तुम बहुत अच्छी दिख रही हो,"
बिली बकरी ने कहा.

"धन्यवाद," मोटी बत्तख ने कहा.

"मैं अच्छा महसूस करती हूँ, क्योंकि मेरा
किसान मुझे भरपेट खाना देता है."

"वो तुम्हें खाने की तैयारी कर रहा होगा," बिली बकरी ने कहा.

"नहीं! अगर संभव हुआ तो मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगी!" मोटी बत्तख ने कहा.
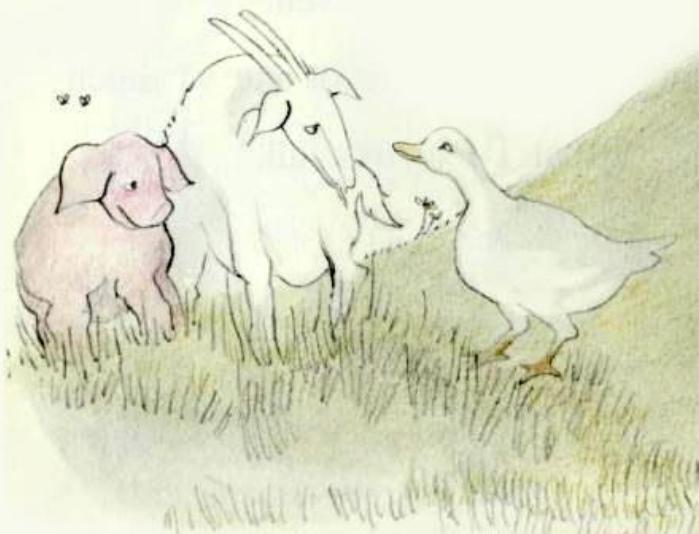
"तो तुम भी हमारे साथ आओ," बिली बकरी ने कहा.

"हम जंगल में एक घर बनाकर एक-साथ शांति से रहेंगे."

मोटी बत्तख उनके साथ जुड़कर खुश हुई.

फिर तीनों नए दोस्त अपने नए घर की तलाश में निकल पड़े.
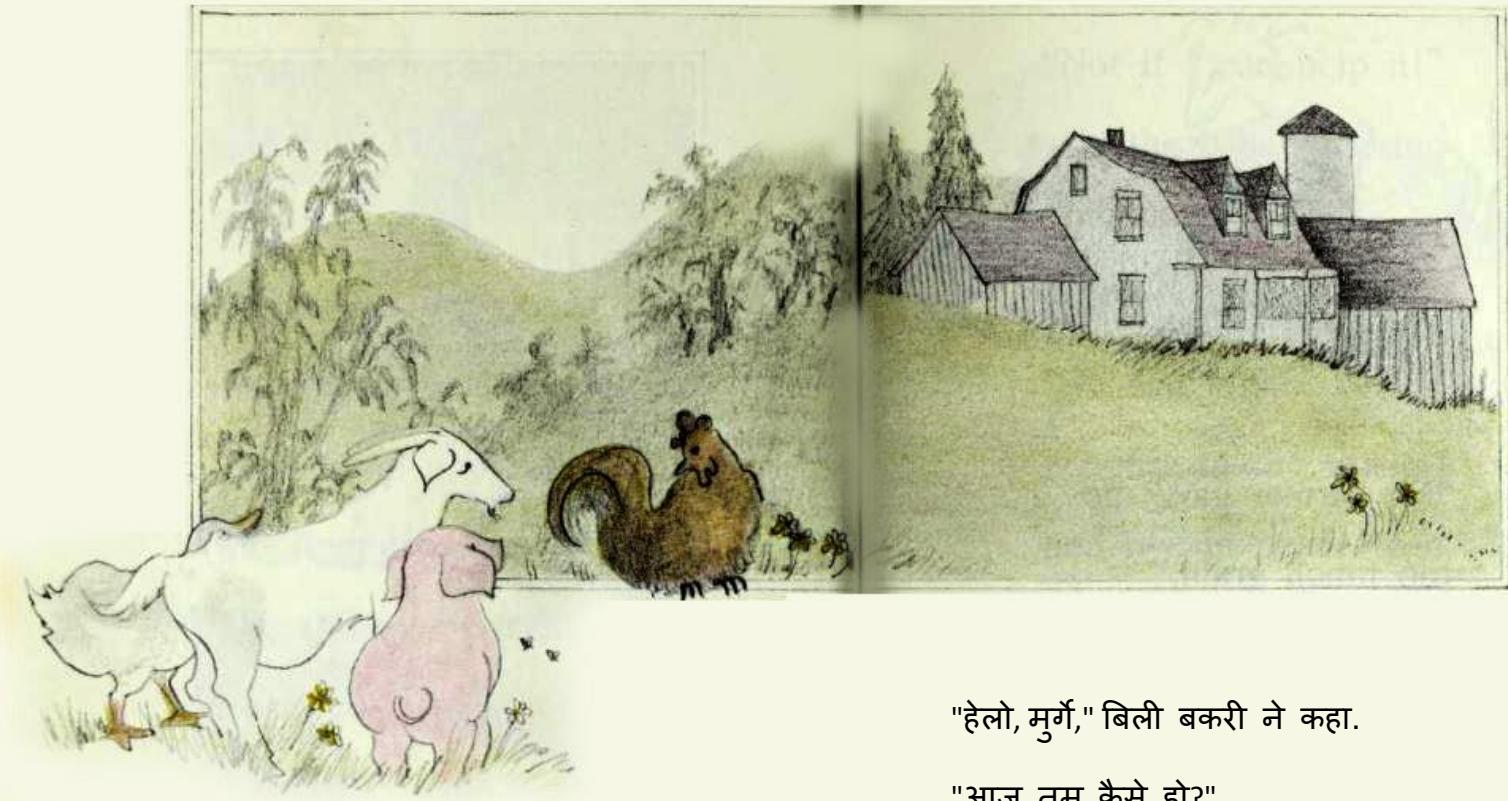
जल्द ही उन्होंने एक गोल-मटोल
मुर्गा देखा.

"हेलो, मुर्गे," बिली बकरी ने कहा.

"आज तुम कैसे हो?"

"मेरी तबियत बहुत अच्छी नहीं है, धन्यवाद,"
मुर्गे ने कहा.

"नहीं! अगर संभव हुआ तो मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा!" गोल-मटोल मुर्गे ने कहा.

"यदि तुम हमारे साथ आओगे," बिली बकरी ने कहा, "तो हम जंगल में एक घर बनाएंगे और फिर वहां एक-साथ शांति से रहेंगे."

गोल-मटोल मुर्गा भी उनके साथ जुड़कर खुश था.

"आज मेरे किसान ने मुझे ढेर सारा अनाज दिया," गोल मुर्गे ने कहा, "और मैं वो पूरा खा गया."

"मुझे लगता है कि किसान तुम्हें खाना चाहता है," बिली बकरी ने कहा.

फिर चारों नए दोस्त एक नए
घर की तलाश में निकल पड़े.
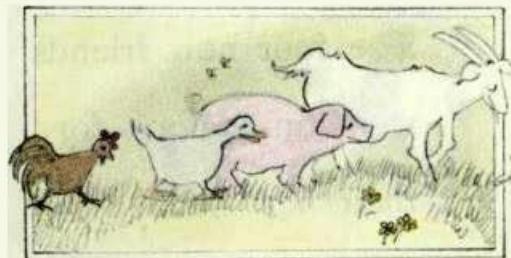
तभी उन्हें रास्ता पार करते एक
आलसी मेमना दिखाई दिया.

"हेलो, मेमने," बिली बकरी ने कहा.

"क्या कुछ गड़बड़ है?"

"नहीं," आलसी मेमने ने कहा, "देखो मेरा किसान मुझे बहुत अच्छा खाना खिलाता है. उससे मेरा शरीर बहुत भारी हो गया है पर मेरे पैर अभी भी बहुत पतले हैं."

"किसान जल्द ही तुम्हें मारकर खा जाएगा," बिली बकरी ने कहा.

"नहीं! अगर संभव हुआ तो मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा!" आलसी मेमने ने कहा.

"यदि तुम हमारे साथ आओगे," बिली बकरी ने कहा, "तो फिर हम जंगल में एक घर बनाएंगे और एक-साथ शांति से रहेंगे."

फिर आलसी मेमना भी उनसे जुड़ गया.

फिर पांचों नए दोस्त अपने नए घर की तलाश में निकल पड़े.
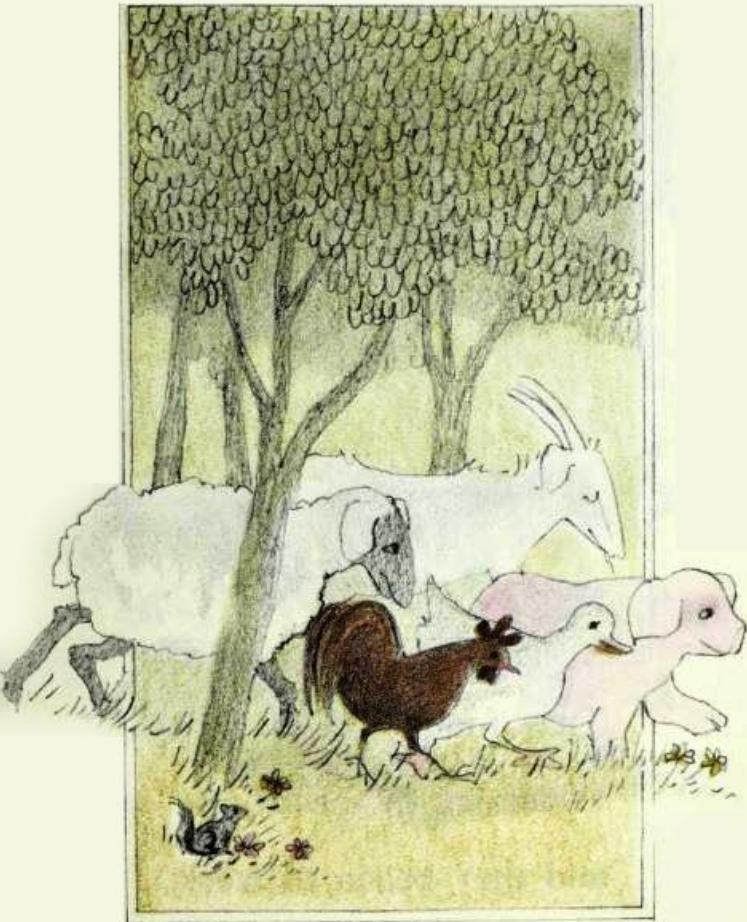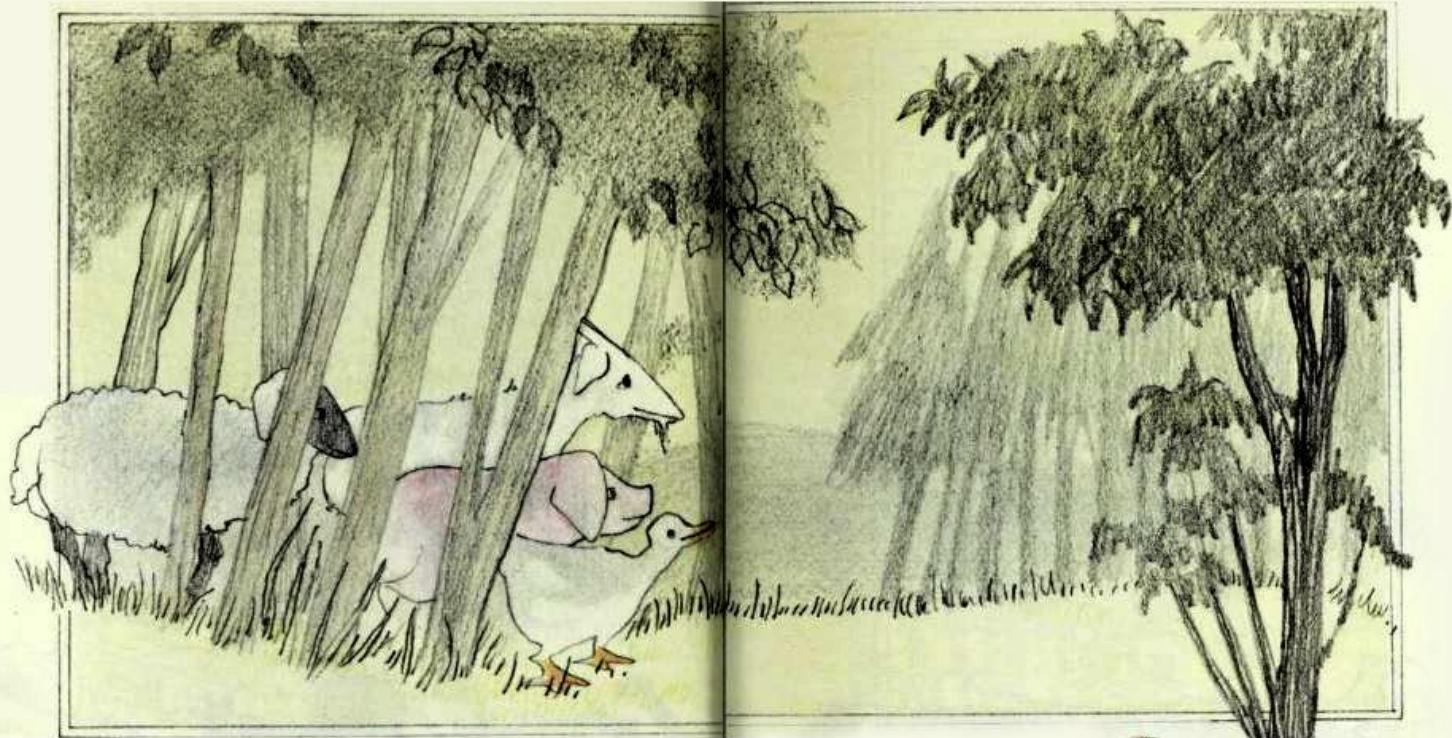
उन्होंने जंगल में एक खुला हिस्सा नज़र आया.
फिर वे तुरंत काम पर लग गए.

वे जंगल के कोने-कोने से
लट्ठे खींचकर लाए.

उन्होंने टहनियाँ इकट्ठी कीं,
और उनसे खूँटे बनाए.

उन्होंने लट्ठों से छत बनाई और
उनकी दरारों में मिट्टी भरी.

उन्होंने खूँटियाँ ठोंकीं, और
पेड़ों की छाल से छत ढंकी.
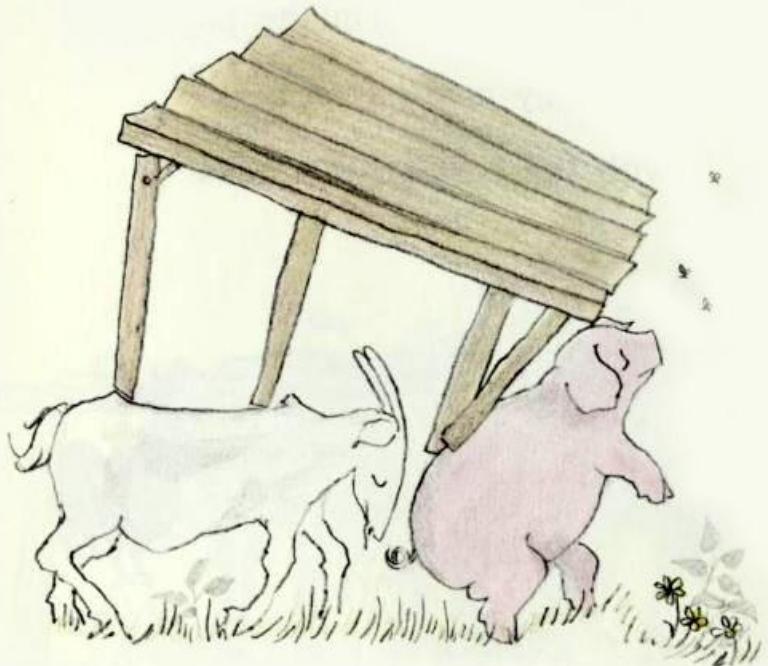
जल्द ही उनका घर तैयार हो गया
और उसमें पाँचों नए दोस्त रहने लगे.

लेकिन जल्द ही कुछ होने वाला था

जो बहुत शांतिपूर्ण नहीं था.

उनके पास एक मांद में दो भेड़िये रहते थे.

भेड़ियों ने अपने नए पड़ोसियों के साथ
कुछ मज़ा करने का फैसला किया.

पहला भेड़िया
खिड़की में से अंदर कूदा
उन्हें चकित करने के लिए.

इससे पहले कि दूसरा भेड़िया कुछ
कर पाता पांचों दोस्त तेज़ी से कूदे.

बिली बकरी ने भेड़िये को
अपने सींगों से मारा.

उससे भेड़िया सिर के बल गिर पड़ा.
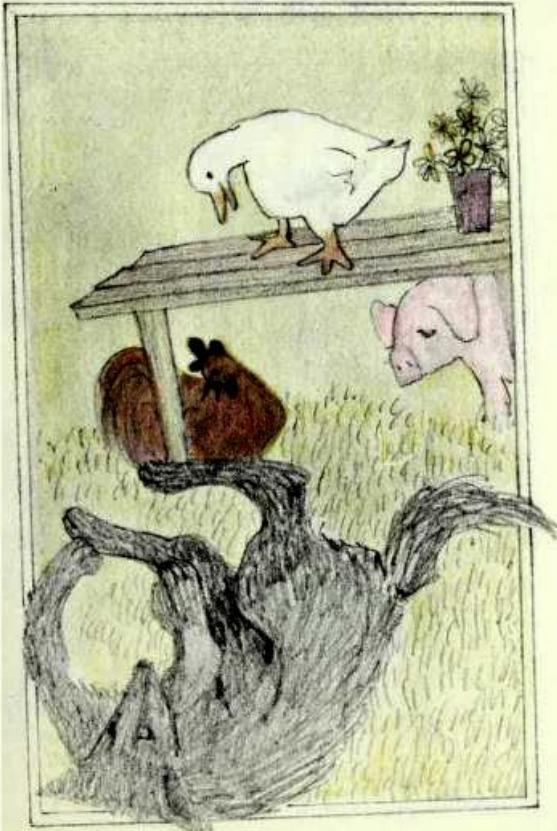
मोटे सुअर ने ज़ोर से
भेड़िये की पूँछ काटी.

मोटी बत्तख ने उसका कान काटा.
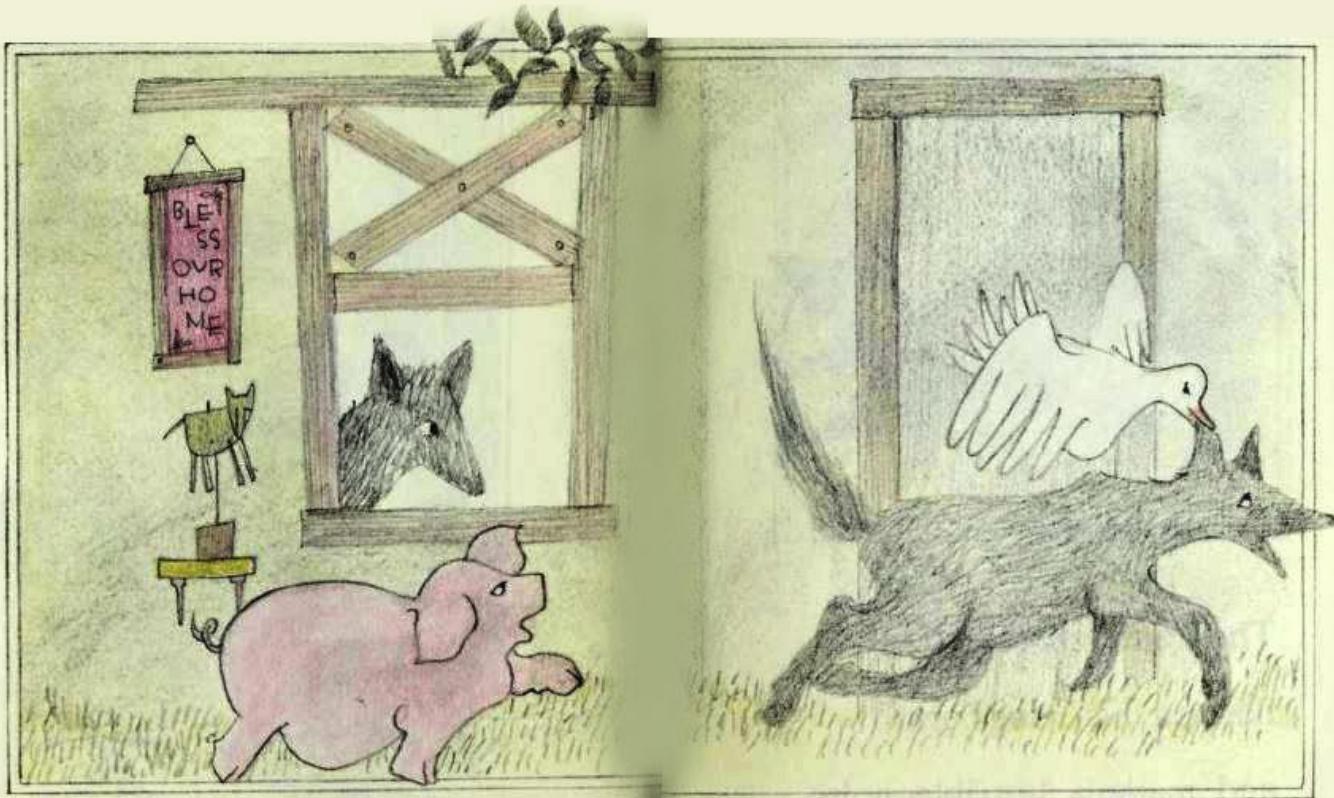
गोल-मटोल मुर्गे ने अपने पंख फड़फड़ाए

और भयानक शोर मचाया.

और आलसी मेमने ने भेड़िये को

ज़ोर से धक्का दिया और उसे

दरवाजे से बाहर खदेड़ दिया.
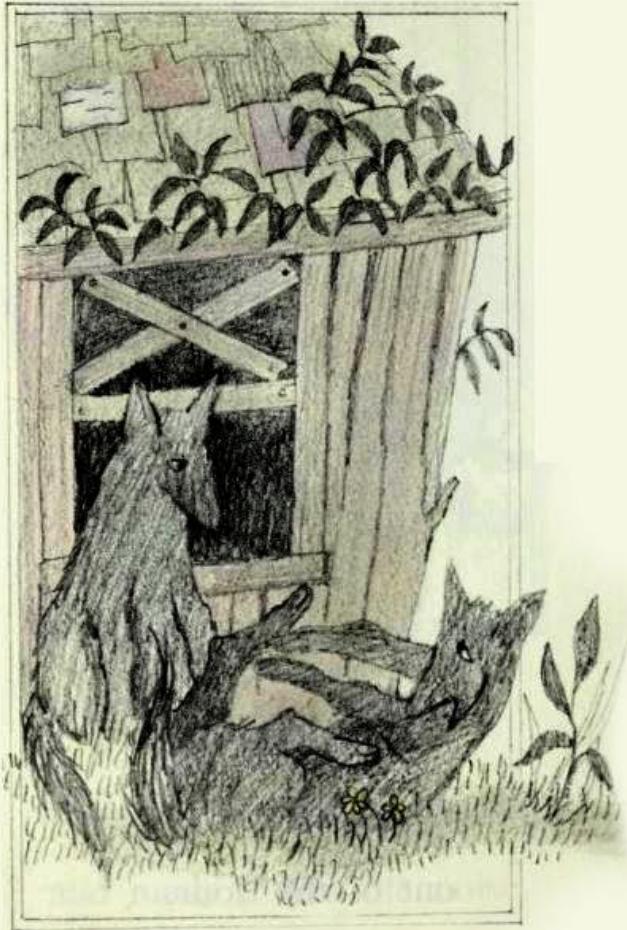
फिर पहले भेड़िये ने

दूसरे भेड़िये से कहा,

"मैं इन पड़ोसियों का फिर कभी
मुंह तक नहीं देखना चाहता हूँ."

दूसरा भेड़िया उसकी बात मान गया.

फिर दोनों भेड़िये भाग गए
और कभी वापस नहीं आए.
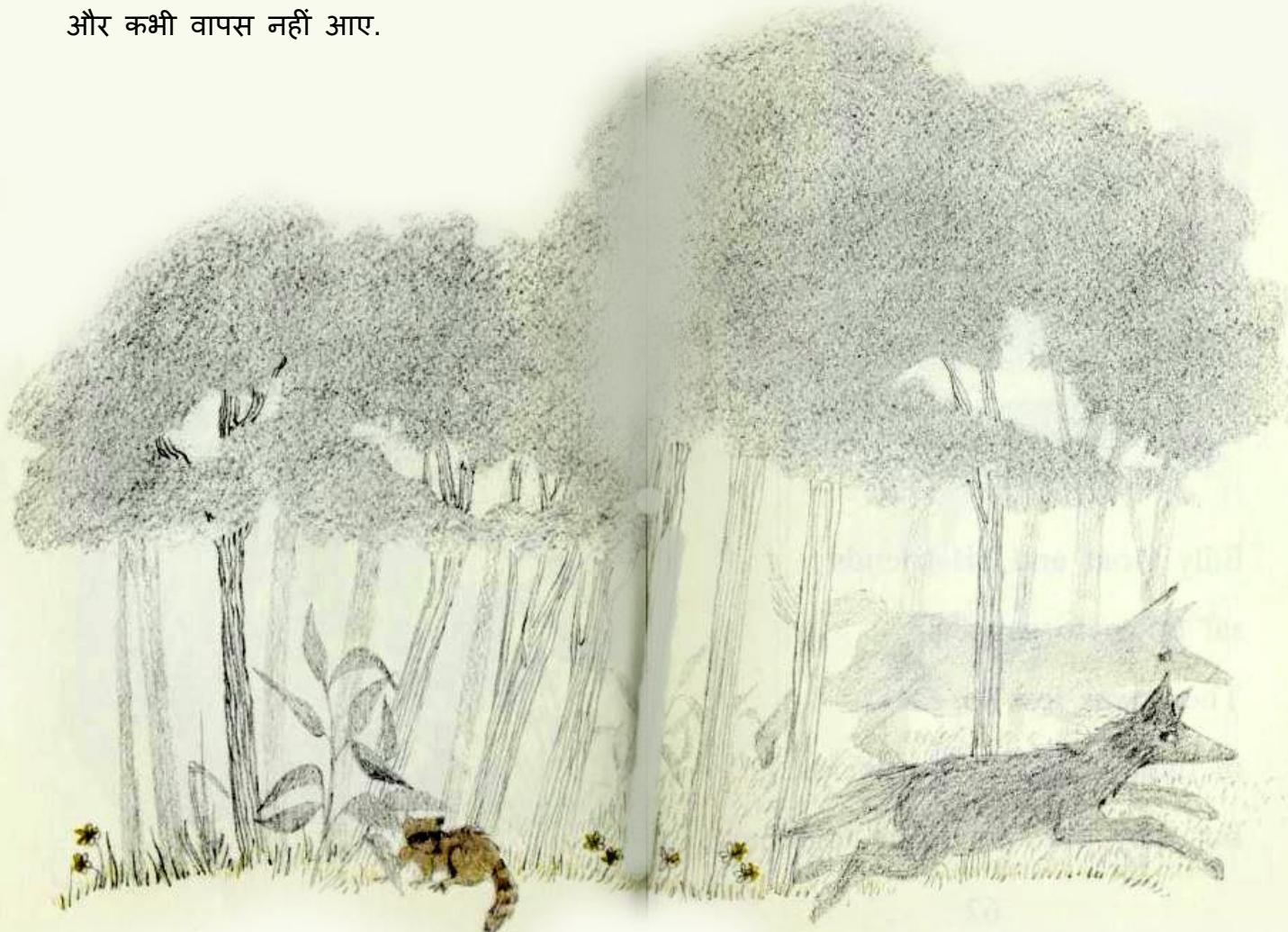
बिली बकरी और उसके दोस्त रात के खाने के लिए बैठे.

जंगल में उन्हें खाने को थोड़ा कम ही मिलता था, पर वे मिल-जुलकर शांति से रहते थे.

अंत